टाल्स्टाय की कहानियाँ

मीठा ज़हर

मीठा ज़हर

टाल्स्टाय की दैनिक जीवन से सम्बन्धित सरल, शिक्षा-
प्रद तथा रोचक कहानियों का भारतीय रूपान्तर

रूपान्तरकार

सन्तराम वत्स्य

ज्ञानभारती, दिल्ली-७

मूल्य : दो रुपये

प्रथम संस्करण, १९६८

प्रकाशक : ज्ञानभारती
२१ यू-बी, जवाहर नगर, दिल्ली-७

मुद्रक : गजेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

दो शब्द

नव-शिक्षितों के लिए महान् लेखकों की रचनाओं को प्रस्तुत करने का मेरा यह दूसरा प्रयास है। इसकी प्रेरणा नव-शिक्षितों के लिए साहित्य निर्माण करने वाले लेखकों की, भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व० डॉ० राजेन्द्रप्रसाद से हुई भेंट में मिली थी। उन्होंने कहा था कि यदि महान् लेखकों-विचारकों की रचनाओं को नव-शिक्षितों की आवश्यकतानुरूप ढालकर प्रस्तुत किया जाए, तो यह एक उपयोगी कार्य होगा।

महान् साहित्यकार टाल्स्टाय, जिन्हें गांधी जी अपना गुरु मानते थे, अपनी चिन्तन-सरणी में भारतीय मनीषियों के समान ही हैं। इस पुस्तक में उनकी तीन प्रसिद्ध कहानियाँ दी गई हैं जो भारतीय परिवेश के अनुरूप हैं। मैंने मूल भाव की सुरक्षा करते हुए इन कहानियों का भारतीयकरण किया है। शेष सब उन्हीं का है। मैं तो निमित्त मात्र हूँ।

क्षमा, सहनशीलता की महिमा और शराब पीने का दुष्परिणाम इनके विषय हैं। ये कहानियाँ मनुष्य को ज्यादा अच्छा मनुष्य बनने की प्रेरणा देती हैं।

मनोरंजन के साथ-साथ जीवनोपयोगी ज्ञान और उदात्त जीवन की प्रेरणा इन कहानियों से मिलेगी, इस आशा के साथ ये प्रस्तुत हैं।

—सन्तराम वत्स्य

दीपावली, १९६८

क्रम

प्रेम में भगवान्	[दयालुता और क्षमा पर एक शिक्षाप्रद कहानी]	५
चिंगारी	[पड़ोसियों के लड़ाई-झगड़े पर शिक्षापूर्ण कहानी]	१६
मीठा ज़हर	[शराब पीने के बुरे परिणामों पर एक रोचक कहानी]	३५

प्रेम में भगवान

जगतपुर में एक बूढ़ा मोची रहता था। उस का नाम था रामदास। वह अब अकेला था। उसकी स्त्री और बच्चे मर चुके थे। उसके पास केवल एक कोठरी थी। उसी में एक ओर रोटी बनाता और दूसरी ओर बैठकर जूते गाँठता-बनाता। वह कई वर्षों से इसी कसबे में रहता था। इसलिए बहुत से लोगों से उसकी जान-पहचान थी। पास-पड़ोस का शायद ही कोई ऐसा आदमी हो, जिसका जूता एक-दो बार उसकी दूकान पर मरम्मत के लिए न आया हो। रामदास काम खूब दिल लगाकर करता था और पैसे भी ज्यादा नहीं मांगता था। और तीसरी बात यह थी कि ठीक समय पर काम कर देता था। वह झूठे वादे बिलकुल नहीं करता था।

वैसे तो रामदास बचपन से ही अच्छे स्वभाव का था, किन्तु बुढ़ापा आ जाने पर तो वह बहुत ही नेक और परोपकारी बन गया था। वह सुबह-शाम, उठते-बैठते भगवान् को याद करता रहता था।

जवानी में उसके कई बच्चे हुए थे, किन्तु सब मर गए। उसकी स्त्री जब मरी, तो तीन वर्ष का एक लड़का छोड़ गई। इस लड़के को रामदास ने बड़े लाड़-प्यार से पाला। यही तो उसके जीवन का सहारा था। किन्तु हाय रे भाग्य ! सात दिन बीमार रहने के बाद यह लड़का भी चल बसा। रामदास का दिल टूट गया ! वह कभी भगवान् से प्रार्थना करता कि हे

भगवान् ! मुझे भी अपने पास बुला ले और कभी पुत्र-वियोग से पागल होकर भगवान् को गालियाँ बकने लगता। धीरे-धीरे उसने भगवान् का नाम तक लेना छोड़ दिया।

एक दिन इसी कसबे के पण्डित भगतराम जी रामदास के घर आए। यह पण्डित जी बड़े ही भले स्वभाव के आदमी थे। उनका बहुत-सा समय भगवान् के भजन में बीतता था। अभी कल ही छः महीने की तीर्थ-यात्रा के बाद घर लौटे थे। उन्हें पता लगा कि रामदास चमार का लड़का मर गया है, तो उसे धीरज बधांने चले आए थे।

रामदास ने अपनी सारी राम-कहानी पण्डित जी को सुनाई। उसने कहा—"पण्डित जी, अब तो यह पापी प्राण निकल जाएं, तो ठीक है। कौन-सा दुःख देखना बाकी रह गया है, जिस के लिए भगवान् मुझे जीवित रखना चाहता है ?"

पण्डित भगतराम जी ने कहा—"रामदास, ऐसी बात मुँह से मत निकलो। हम ईश्वर की बातों को नहीं समझ सकते। वह जो कुछ करता है, ठीक करता है। उसने एक चीज़ तुम्हें दी थी और जब ठीक समझा वापस ले ली। इसके लिए ईश्वर को बुरा-भला कहने की क्या बात है ? रामदास, तुम लड़के के लिए नहीं अपने सुख के लिए रो रहे हो। तुमने सोचा था कि लड़का बड़ा होकर काम सम्भाल लेगा और मैं बुढ़ापे में चैन से रहूँगा। तुम्हारी आशा पूरी नहीं हुई। अब तुम जीना नहीं चाहते। क्योंकि तुम्हें जीवन में सुख नहीं दिखाई देता। तुम अपने सुख के लिए जीना चाहते हो। अरे भाई, ईश्वर के लिए जियो। उसकी इच्छा के अनुसार अपना जीवन बिताओ।"

रामदास ने कहा—"पण्डित जी, आप तो ज्ञान की गहरी बातें कर रहे हैं। मैं यह सब क्या जानूँ ?"

पण्डित जी ने कहा—"रामदास, तुम तो हिन्दी पढ़ लेते हो। मैं तुम्हें एक गीता की पुस्तक दे दूंगा। उसे पढ़ कर तुम्हें पता लग जाएगा कि ईश्वर की इच्छा क्या है ? उसमें सब बातें लिखी हैं। अगर विचार हो तो कहो। उसमें बड़ी अच्छी-अच्छी बातें लिखी हैं। सोचते क्या हो ? अभी चलो मेरे साथ। उसे पढ़ोगे, तो तुम्हारे सारे क्लेश मिट जाएंगे।"

रामदास पण्डित जी के साथ गया। पण्डित जी ने गीता की एक पोथी निकाल कर रामदास को दे दी।

दूसरे दिन नहा-धोकर रामदास गीता पढ़ने लगा। अब वह रोज गीता पढ़ता। रात को रोटी खाकर वह बहुत देर तक गीता पढ़ता रहता। उसे ऐसा लगता, जैसे उसके मन का बोझ

कुछ हलका हो रहा हो।

एक दिन उसने पढ़ा—इस आत्मा को हथियार काट नहीं सकते। आग जला नहीं सकती। पानी गीला नहीं कर सकता। हवा सुखा नहीं सकती।

धीरे-धीरे गीता में उसे ऐसा आनन्द आने लगा कि रात को जब तक दीपक का तेल समाप्त न हो जाता, उठने का नाम ही न लेता।

एक दिन उसने गीता में पढ़ा—जो पैदा होता है, उसकी मौत अवश्य होती है और जो मरता है, वह दूसरा जन्म अवश्य लेता है। इसलिए इसमें शोक मनाने की क्या बात है ?

उसका पुत्र-वियोग का दुःख धीरे-धीरे कम होता गया और भगवान् पर विश्वास बढ़ता गया। अब वह प्रतिदिन दोनों समय गीता पढ़ता और उस में लिखी बातों पर विचार करता। वह दूसरी भी अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ने लगा। एक जगह उसने पढ़ा—भगवान् राम ने भीलनी के जूठे बेर बड़े ही प्रेम से खाए थे। किसी दूसरी पुस्तक में पढ़ा कि भगवान् श्रीकृष्ण ने महाराज दुर्योधन के घर का पकवान छोड़ कर अपने भगत विदुर के घर साग खाया था।

वह सोचने लगा—क्या कभी मेरे घर भी भगवान् आएंगे ? यह सोचते-सोचते उसे नींद आ गई।

उसने सपना देखा—जैसे उसे कोई पुकार-पुकार कर कह रहा हो—"रामदास, मैं कल तुम्हारे पास आऊँगा। उस सड़क की ओर देखते रहना। मैं अवश्य आऊंगा।"

उसकी नींद खुल गई। वह उठ बैठा। देखा तो वहां कोई नहीं था। उसकी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि क्या सचमुच किसी ने मुझे पुकारा है, या मैंने स्वप्न देखा है ?

वह फिर सो गया।

दूसरे दिन सुबह ही उठा। नहा-धो कर प्रार्थना की और फिर चाय का बरतन चूल्हे पर रख कर खिड़की के पास बैठ गया। वह जूतों में टांके लगाता जाता था और रात के सपने के बारे में भी सोचता जाता था। कभी वह सोचता—सचमुच किसी ने मुझे पुकारा था। वह सपना नहीं था। जरूर कोई आया होगा। फिर सोचने लगता—अगर कोई आया होता, तो इतनी जल्दी कहां चला जाता ?

वह काम करता जाता था और बार-बार सड़क की ओर देखता जाता था। सड़क पर कितने ही लोग जा रहे थे। रामदास को अगर कोई अपरिचित दिखाई देता, तो वह झांक कर उसे अच्छी तरह देख लेता।

रामदास को अपने ऊपर हंसी आ गई। उसने सोचा—कहीं बुढ़ापे में मेरी अकल सठिया तो नहीं गई है। लोग अपने काम पर आ-जा रहे हैं और मैं सोच रहा हूँ कि अभी भगवान् मेरी कुटिया पर पधारेंगे। सपने की बात का क्या भरोसा ? सारे सपने कोई सच्चे थोड़े ही होते हैं। उसने मन में निश्चय किया कि अब मैं पागलों की तरह बार-बार उधर नहीं देखूंगा।

अभी दस-बारह टांके लगाए होंगे कि खिड़की की ओर देखने की उसकी बड़ी इच्छा हुई। उसने देखा कि बूढ़ा कालू भंगी, झाड़ू बगल में दबाए दीवार से सटा खड़ा है और फूंक मार कर अपने हाथों को गरमा रहा है। वह सरदी से ठिठुर गया था। उससे झाड़ू तक नहीं पकड़ा जा रहा था।

रामदास ने सोचा, चाय का बरतन तो चूल्हे पर धरा ही है। भीतर बुलाकर एक प्याला उसे भी पिला दूंगा और वह हाथ भी सेंक लेगा।

उसने कालू को आवाज दी। कालू भीतर आ गया। रामदास ने उसे एक प्याला गरमागरम चाय दी और हाथ सेंकने को कहा। कालू ने चाय पी और हाथ सेंके, तो उसकी जान में जान आई।

रामदास अपने आप भी चाय पीने लगा। वह चाय की चुसकियां लेता जाता और बाहर भी देखता जाता था। कालू ने उसे बार-बार बाहर देखते देखा, तो पूछा—"क्या किसी का इन्तज़ार कर रहे हो ?"

रामदास ने बात टाल दी। "नहीं भाई, इन्तजार किसका ?" कालू बाहर जाने लगा तो रामदास ने कहा—"कभी-कभी आया करो भाई। इसे अपना ही घर समझो।"

रामदास भी चाय पीकर अपने काम में लग गया। वह एक जूते का तला सीने लगा। वह टांका लगाता जाता था और खिड़की से सड़क की ओर देखता जाता था।

थोड़ी देर बाद एक स्त्री आई। वह रामदास की खिड़की के पास दीवार के साथ लग कर खड़ी हो गई। रामदास ने उसकी तरफ ध्यान से देखा। वह उसे पहचानता नहीं था। उसके पैर नंगे थे और उसने चीथड़े पहन रखे थे। वह रोते हुए बच्चे को पुचकार रही थी और उसे कसकर अपनी छाती से लगा रखा था। ठण्ड से मां-बेटे दोनों का बुरा हाल था।

रामदास ने हाथ का काम छोड़ दिया। वह दरवाज़ा खोलकर बाहर गया। उसने पुकारा—"बेटी, ओ बेटी !" वह स्त्री रामदास की आवाज़ सुनकर दरवाजे के पास आ गई।

रामदास ने कहा—"तुम ऐसी कड़ाके की ठंड में बच्चे को लेकर वहाँ क्यों खड़ी हो ? भीतर चली आओ।"

स्त्री ने रामदास की तरफ देखा। वह पहले तो कुछ

ठिठक-सी गई, किन्तु फिर भीतर चली आई। रामदास ने उसे बैठने को कहा।

जब वह कुछ सुस्ता ली, तो रामदास ने उसे अँगीठी के पास बैठकर हाथ-पैर सेंकने और बच्चे को दूध पिलाने को कहा।

स्त्री ने कहा—"दूध कहाँ है जो इसे पिलाऊं। दो दिन से अन्न का एक दाना भी पेट में नहीं गया है। फिर दूध कहां से होगा ?"

वह अपनी सारी राम-कहानी भी सुनाने लगी। उसने कहा—"मेरे घर वाला एक सिपाही है। आठ महीने हो गये ,

उसकी कोई चिट्ठी तक नहीं आई। पता नहीं वह कहाँ है। कुछ दिन तो बरतन साफ कर गुज़ारा करती रही। किन्तु जब से यह बच्चा हुआ है, वह काम भी छूट गया। कोई छोटा-सा काम भी मिल जाता, तो इस पापी पेट को भरती और इस बच्चे को पालती। लोग कहते हैं कि मैं बहुत कमजोर हो गई हूँ। अब काम कर सकने के योग्य नहीं हूँ।"

रामदास ने अपना एक पुराना कम्बल उसे दिया और बच्चे को ओढ़ाने के लिये कहा।

स्त्री ने कहा—"बाबा, ईश्वर तुम्हारा भला करे। अगर तुम आवाज न देते, तो यह बच्चा ठण्ड से मर ही जाता।"

रामदास ने बच्चे के लिए थोड़ा दूध मंगवा दिया। दूध पीकर बच्चा चुप हुआ और खेलने लगा। उस ने स्त्री को एक रुपया दिया और कुछ खा-पी लेने को कहा।

अब स्त्री वहां से चलने को तैयार हुई। उसे तो कहीं काम की तलाश करनी थी। रामदास उसे दरवाजे तक छोड़ने गया। वापस आकर वह फिर अपना काम करने लगा।

रामदास काम करता जाता था और बार-बार खिड़की की ओर भी झांक लेता था।

थोड़ी देर बाद उस ने देखा कि एक कुबड़ी बुढ़िया खिड़की के सामने आकर ठहरी। उसके सिर पर अमरूदों की एक टोकरी थी। थोड़े ही अमरूद बाकी बचे थे। बुढ़िया ने टोकरी नीचे रख दी। और सुस्ताने लगी। इतने में एक लड़का आया। वह बुढ़िया की आंख बचाकर अमरूद उठाने की कोशिश कर रहा था। बुढ़िया ने उसे पकड़ लिया। लड़का हाथ छुड़ाकर भाग जाना चाहता था। बुढ़िया ने उसे और भी कस कर पकड़ लिया। और दूसरे हाथ से मुँह पर एक चपत भी लगा

दी। लड़का चीखने-चिल्लाने लगा।

रामदास ने लड़के की चीख सुनी, तो उठकर बाहर आ गया। बुढ़िया लड़के के बालों को झटका कर खींच रही थी और थाने ले जाने की धमकी दे रही थी।

लड़का अपने को छुड़ाने की पूरी कोशिश कर रहा था कि मैंने अमरूद कब चुराए ? तुम मुझे झूठ-मूठ कह रही हो।

रामदास ने लड़के को छुड़ा दिया और लड़के का हाथ पकड़ कर बुढ़िया से कहा—"बुढ़िया, इस को जाने दो। भगवान् के लिये इसे क्षमा कर दो।" बुढ़िया ने कहा—"मैं इसे ऐसा मज़ा चखाऊंगी कि याद रखेगा। थाने में मार पड़ेगी, तो फिर दोबारा कभी चोरी नहीं करेगा।"

रामदास बुढ़िया की मिन्नतें करने लगा। वह कहने लगा—"बुढ़िया, ईश्वर के लिए इसे छोड़ दो। अब वह कभी ऐसा काम नहीं करेगा।"

बुढ़िया चुप हो गई। लड़का रामदास के हाथ से अपना हाथ छुड़ा कर भागना चाहता था। रामदास ने उसे अच्छी तरह पकड़कर कहा—"पहले बुढ़िया से माफी माँगो और वादा करो कि फिर कभी ऐसा काम नहीं करोगे। मैंने अपनी आँखों से तुम्हें अमरूद उठाते देखा है।"

लड़का रोकर क्षमा माँगने लगा।

रामदास ने कहा—"तुम अच्छे लड़के हो। फिर कभी यह काम न करना।" उसने बुढ़िया की टोकरी से एक अमरूद उठाकर लड़के को दिया और बुढ़िया से कहा—"बूढ़ी माँ, इसके पैसे मैं अभी देता हूँ।"

बुढ़िया—"इस तरह तो यह और भी बिगड़ेगा। इसे मिलनी तो चाहिये थी सज़ा और तुम इनाम दे रहे हो।"

रामदास—"अरी बूढ़ी मां, ऐसा न कहो। हम में से निरपराध कौन है ?" अगर एक अमरूद चुराने पर लड़के को कोड़े लगाए जाएं, तो हमारे-तुम्हारे अपराधों का क्या दण्ड होगा ?"

बुढ़िया चुप हो गई।

रामदास फिर कहने लगा, "भगवान् की यही इच्छा है कि हम दूसरों के अपराधों को क्षमा कर दें। यह इस लिए कि वह हमारे अपराधों को क्षमा कर दे। हमें चाहिए कि एक दूसरे के अपराधों को क्षमा कर दें। यह बेचारा तो बालक है। इसकी तो बात ही क्या !"

बुढ़िया ने सिर हिलाकर लम्बी सांस ली। फिर कहा—"तुम्हारी बात तो ठीक है, पर आजकल के लड़के बिगड़ते जा रहे हैं।"

रामदास—"तो हम बूढ़ों को चाहिये कि इन्हें ठीक रास्ते पर लाएं।"

इसके बाद बुढ़िया अपनी टोकरी उठाकर सिर पर रखने लगी। इतने में लड़का बोला—"दादी, मैं भी तो उधर ही जा रहा हूँ। लाओ मेरे पास दो। मैं ले चलता हूँ।"

लड़के ने टोकरी उठा ली और बुढ़िया के साथ-साथ चलने लगा। बुढ़िया रामदास से अमरूद के पैसे मांगना भूल ही गई। रामदास को भी याद नहीं रहा। रामदास फिर काम करने लगा।

शाम को सड़क की बत्तियां जगीं, तो उसने काम छोड़-दिया। अपने औजार सम्भाल कर एक ओर रख दिये। अपनी लालटेन साफ करके जलाई। खाना पकाया-खाया। खा-पीकर उसने आले से गीता की पोथी निकाली। पिछली बार उसने

जहां तक पढ़ा था, वहां निशान के लिए चमड़े की एक करतन रख दी थी। वह फिर आगे पढ़ने लगा। यह भगवान् के विराट रूप का वर्णन था। भक्तिभाव के कारण रामदास की आंखों में आंसू छलकने लगे। आज वह फिर पढ़ते-पढ़ते सो गया। सोते में उसे आवाज सुनाई दी, "क्या तुमने मुझे नहीं पहचाना ?"

रामदास—"कौन है ?"

फिर आवाज आई। "मैं हूँ ?" साथ ही उसे बूढ़ा कालू दिखाई दिया। उसके बाद बच्चा गोद में लिये स्त्री दिखाई दी और उसके बाद वह लड़का और बुढ़िया।

रामदास की नींद खुल गई। वह उठ बैठा, उसकी खुशी का ठिकाना न था। वह बार-बार प्रार्थना के गीत गाने लगा। इस तरह भगवान् के प्रेम में मस्त होकर गाते-गाते उसे नींद आ गई।

* * *

चिंगारी

दस साल पहले की बात है। सुजानपुर में सुखराम नाम का एक किसान रहता था। उसके घर की हालत अच्छी थी। किसी चीज की कमी न थी। तीन लड़के थे। बड़े की शादी हो चुकी थी। मंझले की सगाई हो गयी थी और जल्दी ही शादी होने वाली थी। तीसरा लड़का भी अब समझदार हो गया था। वह खेती-बाड़ी का कुछ काम कर लेता था। सुखराम की स्त्री गुलाबो भी बड़ी समझदार थी। उसने सारा घर संभाल रखा था। भाग्य से बहू भी समझदार मिली। पास-पड़ोस वाले कहते थे कि सुखराम ने पिछले जन्म में कोई बड़ा पुण्य किया था, जिसका फल उसे अब मिल रहा है। हां, सुखराम का बूढ़ा पिता जरूर कई सालों से बीमार था। उसे दमे की बीमारी थी। वह अंगीठी के पास चारपाई डाले पड़ा हुक्क़ा गुड़गुड़ाता रहता और खांसता रहता था।

सुखराम के पास एक जोड़ी बैल, एक ब्याई हुई गाय, एक घोड़ी और पन्द्रह-बीस भेड़-बकरियां थी। स्त्रियां घर का सारा काम करतीं। चरखा चलातीं और समय बचता, तो खेती के काम में भी हाथ बंटातीं। गुजारे लायक जमीन उनके पास थी। डटकर मेहनत करते थे, इस लिए फसल भी खूब होती थी। फसल बेचकर ही मालगुजारी देते थे और ऊपर के खर्च के लिए भी रुपया बच जाता था। किन्तु लड़ाई की एक छोटी-सी चिंगारी ने इस भरे-पूरे घर का नाश कर दिया। अकेले सुखराम के ही घर का नाश हुआ हो यह बात नहीं, पड़ोसी

बिसना का भी कुछ न बचा।

जब तक सुखराम का पिता काम-काज करता था, तब तक दोनों पड़ोसियों में खूब मेल-जोल था। दोनों के घरों में किसी स्त्री को चीज की आवश्यकता होती, तो बेखटके एक-दूसरे से मांग लेतीं। यही हाल पुरुषों का भी था। किसी को बोरी की आवश्यकता होती या किसी की गाड़ी का पहिया टूट जाता, तो एक दूसरे से मांग लेते और एक दूसरे को दे भी देते। वे नेक पड़ोसियों की तरह मेल-मिलाप से रहते। एक का बछड़ा दूसरे के खलिहान में चला जाता, तो वह उसे बाहर कर देता और कह देता, कि "हमारा अनाज बाहर पड़ा है, बछड़े को सावधानी से बाँध लो।"

यह बुड्ढों के समय की बात है किन्तु जब लड़के घर के मालिक हुए तो इससे बिलकुल उलट बातें होने लगीं। जरा-जरा-सी बात पर आपस में झगड़ा हो पड़ता।

सुखराम की बहू ने मुर्गियाँ पाल रखी थीं। एक मुर्गी अण्डे दे रही थी। वह इन अण्डों को किसी खास दिन के लिए संभाल कर रखती जाती थी। रोज़ मुर्गी अपने ठिकाने पर अण्डा देती थी, किन्तु आज बच्चों ने उसे वहाँ से भगा दिया। मुर्गी दीवार लाँघकर बिसना के आँगन में जा बैठी और वहीं अण्डा भी दिया। सुखराम की बहू ने मुर्गी के बोलने की आवाज तो सुनी किंतु सोचा, हाथ का काम पूरा करके जाऊंगी और अण्डा ले आऊंगी। वह अपने काम में लगी रही।

शाम को वह मुर्गी के ठिकाने पर गई, पर उसे अण्डा न मिला। उसने लौटकर अपनी सास और देवर से पूछा कि किसी ने अण्डा तो नहीं उठाया? दोनों ने उत्तर दिया—"नहीं।" किन्तु छोटे देवर ने कहा कि "मुर्गी बिसना चाचा के आँगन में

बैठी थी। वहीं उसने अण्डा भी दिया होगा।"

वह बिसना के घर गई। उसे देखते ही बिसना की बूढ़ी माँ पूछने लगी—"कहो बेटी, कैसे आई। क्या कुछ काम है?"

बहू ने कहा—"दादीजी, हमारी मुर्गी दीवार लाँघकर इधर आ गई थी। वह यहीं कहीं अण्डा दे गई है। उसे देखने आई हूँ।"

बुढ़िया ने कहा—"हमने तो कहीं अण्डा-वण्डा देखा

नहीं। ईश्वर की कृपा है। अपनी मुर्गियाँ बहुत दिनों से अण्डे दे रही हैं। दूसरों के अण्डों से हमें क्या मतलब ?"

बहू को यह बात बुरी लगी। उसने एक के बदले दस सुनाईं। फिर बुढ़िया ही भला क्यों चुप रहती। दोनों में गाली-गलौज होने लगा। उधर से गुलाबो कुएं से पानी लिए आ रही थी, उसने सुना कि बहू के साथ बिसना की माँ झगड़ रही है, तो वह भी बिना पूछ-ताछ किए बिसना की माँ से झगड़ने लगी। उधर बिसना की स्त्री भो हो-हल्ला सुनकर भागी-भागी आई। वह भी बिना कुछ पूछताछ किये झगड़े में शामिल हो गई। बस फिर क्या था, पूरा महाभारत शुरू हो गया। बिना गाली के किसी के मुँह से बात ही न निकलती थी। बहुत ही गन्दी-गन्दी गालियाँ एक दूसरे को सुना रही थीं। कौन क्या कह रही है, कुछ पता नहीं चलता था।

इतने में गली-कूचे की सारी स्त्रियाँ इकट्ठी हो गईं और तमाशा देखने लगीं। उधर गालियों से हटकर हाथापाई शुरू हो गई। बिसना खेत से लौटकर आया। वह भी अपनी स्त्री की सहायता करने लगा। अब तक सुखराम और उसका लड़का चुप थे। वह स्त्रियों के झगड़े में पड़ना ठीक नहीं समझ रहे थे किन्तु उन्होंने देखा कि बिसना अपनी स्त्री की सहायता कर रहा है, तो वे भी दौड़ पड़े। सुखराम काफी तगड़ा था। उसने जाते ही बिसना को गर्दन पकड़ कर दो-चार घूँसे जमा दिये। फिर बिसना की दाढ़ी को पकड़ कर एक झटका दिया। उस बेचारे की दाढ़ी ही नुच गई। फिर क्या था ? झगड़ा बढ़ने लगा। पास-पड़ोस वाले भी दौड़ पड़े कि आखिर बात क्या है ? उन्होंने बीच-बचाव करके छुड़ा दिया।

देखा आपने, राई का पर्वत कैसे बनता है ? आग सुल-

गाने पर एक चिनगारी लपटों का रूप कैसे धारण करती है ?

बिसना ने अपनी दाढ़ी के उन बालों को, जो झगड़े में नुच गये थे, एक कागज में लपेट लिया। वह लोगों से कहता फिरता था कि सुखराम को कैद न करा दिया, तो मेरा नाम भी बिसना नहीं।

उधर सुखराम लोगों से कहता कि अभी तो बेटा की दाढ़ी ही नुची है। यदि फिर कभी मौका मिला, तो हाथ-पैर तोड़ कर लूला बना छोड़ूँगा। अदालत में नालिश करता फिरता है। जितनी मरज़ी नालिश करता फिरे। यहाँ किसी से डरते थोड़े ही हैं। उसी के खिलाफ फैसला न दिलवा दिया, तो सुखराम न कहना।

सुखराम के पिता ने चारपाई पर पड़े-पड़े यह किस्सा सुना, तो उसका दिल बहुत दुखी हुआ। उसने सुखराम से कहा—"बेटा ! छोटी-सी बात को खींचकर इस तरह बढ़ाना ठीक नहीं। अरे एक अण्डे के लिए इतना झगड़ा। भला यह भी कोई बात है ! कोई लड़का उठा ले गया होगा। कहते भी शर्म आती है। और फिर अगर उन्होंने एकाध कड़ी बात भी कह दी थी, तो सह लेते। उन्हें भी शर्म आती और झगड़ा भी न बढ़ता। खैर, जो हुआ सो हुआ। मेरी मानो तो अब इस झगड़े को आगे मत बढ़ाओ। आग पानी डालने से बुझती है, घी डालने से तो भड़केगी ही। आपस में मिलकर झगड़े को यहीं निबटा दो।

किन्तु सुखराम का खून तो गुस्से से खौल रहा था। वह बुड्ढे की बात को कैसे मानता ? उसने मन में सोचा—बुड्ढा सठिया गया है। पड़े-पड़े बेमतलब की बातें करने के सिवा इसे और काम ही क्या है ? यह कैसे हो सकता कि है मैं बिसना के

आगे झुक जाऊँ। वह मुझ पर झूठ-मूठ का मुकदमा बना बैठा है। अपने हाथ अपनी दाढ़ी नोच डाली और नाम मेरा लगा दिया। उससे कोई पूछे कि स्त्रियों की लड़ाई में वह पड़ा ही क्यों ?

सुखराम भी अदालत में पहुँचा। पहले तहसील में और फिर जिला अदालत में। इस बीच किसी ने बिसना की गाड़ी का धुरा चुरा लिया। बिसना के घर की स्त्रियाँ पास-पड़ोस में कहती फिरीं कि यह सुखराम के मंझले लड़के का ही काम है। हमने अपनी आँखों उसे लेकर भागते देखा है और भीखू कहता था कि मैंने उसे बढ़ई को बेचते देखा है।

बिसना की ओर से एक और चोरी का मुकदमा दायर हो गया। स्त्रियों में तो लगभग रोज ही किसी न किसी बात को लेकर झगड़ा हो जाता था। बड़ों की देखा-देखी बच्चे भी आपस में झगड़ने लगे।

पहले तो एक दूसरे को भला-बुरा कह कर ही सन्तोष कर लेते थे, किन्तु अब मामला और भी आगे बढ़ा। वे एक दूसरे की वस्तुएं चुराने और छिपाने लगे। जिसके हाथ दूसरे की जो वस्तु लगती, वह उसे ही उड़ा लेता। अब तो दोनों का जीना दूभर हो गया। उधर मुकदमे आगे बढ़ते गए। बात-बात में बात निकलने लगी। कभी सुखराम के हक में फैसला होता, तो कभी बिसना के हक में। एक दूसरे को हराने पर तुले हुए थे। मंहगे से महंगा वकील करते और नित नये झूठे गवाह बनाकर लाते। जिसको सजा मिलती, वह हारे हुए जुआरिये की तरह अगली बार और ज्यादा खर्च करता और पिछली कसर निकालने की सोचता।

पूरे दो साल यही हाल रहा।

बुड्ढे बाप ने फिर समझाया। "क्यों बदला-बदला पुकारते हो, बेटा। इस तरह तो सारी उमर लड़ते ही रहोगे। भलाई इसी में है कि अपने-अपने मन को साफ करो। बदला, फिर उसका बदला और फिर बदले का बदला। इसका तो कभी अन्त ही न होगा।"

बुड्ढे की बात फिर किसी ने न सुनी।

तीसरा साल आ गया। सुखराम के एक दूसरे पड़ोसी के घर शादी थी। बहुत-से स्त्री-पुरुष इकट्ठे हुए थे। बातों-बातों में सुखराम की बहू ने औरतों में कह दिया कि बिसना पक्का चोर है। उसने हमारी कई चीज़ें चुरा ली हैं। पास ही कहीं बिसना सुन रहा था। वह नशे में चूर था। उसने इतने लोगों में अपनी बे-इज्ज़ती होते सुनी, तो मारे गुस्से के लाल-पीला हो गया। वह अपने गुस्से को काबू में न रख सका। उसने सुखराम की बहू को एक ज़ोर का मुक्का मारा। मुक्का उसके पेट में लगा। वह पूरे आठ दिन बिस्तरे पर पड़ी रही। उसे बच्चा होने वाला था। इसलिए उसकी तकलीफ और ज्यादा बढ़ गई।

सुखराम इस घटना से बहुत प्रसन्न हुआ। वह सोचने लगा कि अब की बार तो बिसना पर ऐसा जोर का मुकद्दमा बनाऊंगा कि पूरे सात साल की सजा मिलेगी। न रहेगा बांस, न बजेगी बाँसुरी। किन्तु सुखराम की इच्छा पूरी न हुई। अदालत ने मुकद्दमा खारिज कर दिया। उसने अपील कर दी। अपील मंजूर हो गई। इस मुकद्दमे की पैरवी में उसने पानी की तरह रुपया बहाया। आधी ज़मीन तक बेच डाली। फैसला उसके हक में हुआ, किन्तु बिसना को कोई बड़ी सज़ा नहीं मिली। अदालत ने उसे पाँच सौ रुपए जुर्माना कर दिया।

फैसला सुनते ही बिसना का रंग फ़क़ हो गया। सुखराम भी अपनी जीत से ज्यादा खुश नहीं था। जितना उसने सोचा था, यह सज़ा उस से बहुत कम थी। अदालत के कमरे से बाहर निकलते हुए बिसना ने कहा—"तेरा सब कुछ जलाकर राख न कर दिया, तो कहना।"

सुखराम फिर मजिस्ट्रेट के पास गया और कहने लगा—"सरकार, बिसना मेरे घर में आग लगाने को धमकी दे रहा है। अभी-अभी सब के सामने उसने यह बात कही है, हजूर।"

बिसना को बुलाया गया। हाकिम ने पूछा, "क्या तुमने आग लगाने की धमकी दी है ?"

बिसना ने कहा—"नहीं सरकार, मैंने कुछ नहीं कहा है। मुझ पर यों ही झूठे इलजाम लगाता है।"

वह और भी कुछ कहना चाहता था, किन्तु उसके होंठ थर-थर काँपने लगे। उसने अपना मुँह दीवार की ओर कर लिया।

हाकिम ने दोनों को समझाते हुए कहा—"देखो, अब तुम आपस में मेल-मिलाप कर लो, तो ठीक है। इस तरह झगड़ने से किसी के हाथ कुछ न आएगा। देखो बिसना, तुम्हीं सोचो कि क्या गर्भवती स्त्री को पेट में मुक्का मारना उचित था ? यह तो अच्छा हुआ कि उसके ज्यादा चोट न आई। नहीं तो तुम्हारा सारा जीवन जेल में कटता। अगर तुम अब भी सुखराम से माफी मांग लो, तो मैं भी तुम्हारी सजा रद्द कर दूंगा।"

सरिश्तेदार ने कहा—"नही सरकार, अब फैसला रद्द नहीं हो सकता। जब मुद्दई और मुद्दाला में मेल नहीं हो सका, तभी अदालत ने फैसला किया है। अब उस पर अमल करना ही

पड़ेगा।"

सरिश्तेदार के यह कहने पर हाकिम ने उसकी बात की जरा भी परवाह न की। हाकिम ने कहा—"कानून का उद्देश्य केवल जनता की भलाई है। मैं कानून को तुमसे ज्यादा समझता हूँ। तुम अपना काम करो।"

किन्तु इस भले हाकिम की बात भी बिसना ने न मानी। वह माफी माँगने के लिए तैयार न हुआ।

सुखराम खुशी-खुशी अपने घर आया। इस समय उसके बूढ़े पिता के सिवा घर पर कोई नहीं था। स्त्रियां पानी भरने गई हुई थीं और लड़के अभी खेत से नहीं लौटे थे। वह बैठ कर सोचने लगा—बिसना का रंग सज़ा सुनते ही कैसे उड़ गया था? शर्म के मारे उसने अपना मुंह दीवाल की ओर कर लिया था। यह सारा दृश्य उसकी आँखों के आगे नाचने लगा।

सुखराम के आने की आहट सुनकर उसका बूढ़ा पिता चारपाई पर उठ बैठा। उसने पूछा—"तो क्या उसे सजा मिल गई?"

सुखराम—"हां, पांच सौ रुपये जुर्माना हुआ!"

बुड्ढे ने लम्बी सांस ली और सिर हिलाते हुए कहा—

"बहुत बुरा हुआ। सुखराम तुम बहुत बुरा कर रहे हो। मैं पूछता हूँ, उसे जुर्माना करवाने से तुम्हारे हाथ क्या आया?"

सुखराम—"अब आगे वह कभी ऐसा काम नहीं करेगा। उसे शिक्षा मिल गई।

बुड्ढा—"क्या शिक्षा मिल जाएगी। शिक्षा देने का यह ढंग है? ऐसे भी किसी को शिक्षा मिलती है?"

थोड़ा खांसकर बुड्ढे ने फिर कहना शुरू किया—

"देखो सुखराम, तुम सब जगह घूमते-फिरते हो और मैं वर्षों से यहीं चारपाई पर पड़ा हूँ। तुम सोचते होगे कि तुम सब कुछ देखते हो और मैं कुछ नहीं देखता हूँ। किन्तु बेटा, सच बात तो यह है कि तुम कुछ नहीं देख

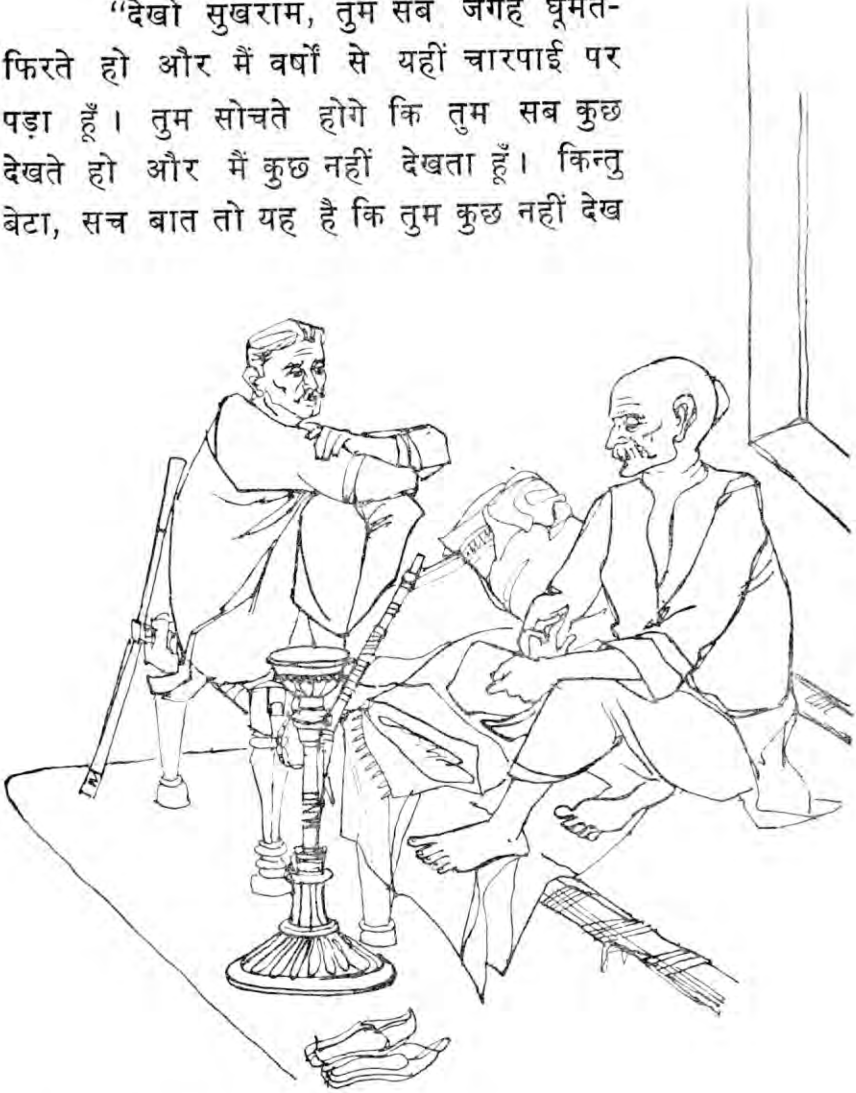

रहे हो। शत्रुता ने तुम्हें अन्धा कर दिया है। दूसरों के अपराध तो तुम्हें दिखाई देते हैं किन्तु अपने नहीं। देखो बेटा,

ताली दोनों हाथों से बजती है। मान लो कि वह बुरा है, किन्तु यदि तुम भले होते, तो झगड़ा आगे न बढ़ता। तुम सारा अपराध उसी के माथे मढ़ते हो और आप सांचे बनते हो। मैं पूछता हूँ कि यह लड़ाई-झगड़े की बातें तुमने सीखीं कहां से? मैं तो कभी किसी से लड़ता नहीं था।

"जानते हो कि मैं और बिसना का पिता कैसे मेल-मिलाप से रहते थे? क्या हम लोगों से तुमने यही सीखा है? और फिर तुम बड़ों की देखा-देखी बच्चे भी यही कुछ कर रहे हैं। परसों वह छोटा लड़का बिसना की मां को गालियां निकाल रहा था और उसकी मां पास खड़ी हंस रही थी। क्या तुम समझते हो कि ऐसा ही होना चाहिए?"

सुखराम चुपचाप सारी बातें सुनता रहा। बुड्ढा कहते-कहते हांफने लगा था। उसका दम फूल रहा था। ज़रा सुस्ताने के लिए वह चुप हो गया।

उसने फिर खाँसकर गला साफ करते हुए कहना शुरू किया—"तुम सोचते होगे कि बुड्ढे का दिमाग खराब हो गया है। अच्छा मेरी एक बात का उत्तर दो। जबसे तुमने यह झगड़ा शुरू कर रखा है, तुम फायदे में हो या घाटे में? चुप क्यों हो गए? बोलते क्यों नहीं? बताओ तो, अब तक वकीलों और मुंशियों की जेब में कितना रुपया जा चुका है? आने-जाने और खाने-पीने में जो खर्च हुआ, वह अलग। कौड़ी तो पास बची नहीं। उलटे ज़मीन का भी एक हिस्सा बेच डाला। अब तो पेट भर रोटियां भी नहीं मिलेंगी। अब न समय पर बीज बोया जाता है और न ही पूरी मेहनत की जाती है। इसलिए अबकी कुछ उपजा नहीं। छोड़ो इस झगड़े को और मेहनत से खेती-बाड़ी करो।

सुखराम पहले ही की तरह चुप रहा। बूढ़ा कुछ और कहना चाहता था कि इसी समय घर की स्त्रियाँ चें-चें करती हुई आ पहुंचीं। बिसना को जुर्माना होने की बात और उसकी आग लगाने की धमकी वे पहले ही सुन चुकी थीं। वे अभी बिसना के घर की स्त्रियों से झगड़ कर आई थीं। उन्होंने कहा कि एक पक्के आदमी से सुना है कि बिसना ने हाकिम को घूंस दी है। अबकी बार पासा पलट जायेगा। बिसना की स्त्री कहती है कि इनकी सारी ज़मीन-जायदाद बिकवा कर छोड़ेंगे।

सुखराम ने यह सारी बातें सुनीं तो जल-भुन गया। प्रेम और दया की बातें धरी-धराई रह गईं।

उधर बिसना भी जुर्माना भरकर वापस घर पहुँच गया था। आज के फैसले से वह खीझ उठा था। वह सुखराम को सुनाने के लिये ऊंची आवज़ में तरह-तरह की बातों करने लगा। उसने कहा—"वह है किस खेत की मूली। अबकी ऐसा छका-ऊंगा कि बेटा याद करेगा।"

सुखराम ने यह सारी बातें अपने कानों सुनीं। उसके मन में फिर क्रोध की आग जलने लगी। वह घर के भीतर आया। दरवाज़े में पालतू कुत्ता बैठा था। उसको ज़ोर की एक लात मारी और कहने लगा—"जब देखो तब रास्ते में बैठा हुआ, इधर-उधर तो इसे जगह ही नहीं मिलती। कुत्ता बेचारा चौं-चौं करता हुआ बाहर निकल गया।

भीतर गया तो देखा कि कमरे में बाल्टी पड़ी है। एक तरफ कुदाल पड़ा है। वह घर की स्त्रियों पर बिगड़ने लगा। "यह कोई बाल्टी रखने की जगह है। सौ बार समझाया कि चीज़ को ठीक जगह पर रखा करो, पर कोई सुनता ही नहीं।

यह कुदाल यहां किसने रखा है ? चुप क्यों हो गये सब, बताते क्यों नहीं ? दीखता है, सीधे मुंह कोई नहीं मानेगा।" छोटा लड़का बैठा कोई किताब पढ़ रहा था। उसको कहने लगा, "देख क्या रहे हो, उठाओ इन चीजों को। जब देखो किताब आँखों से लगाए बैठे रहता है। जैसे और कोई काम ही न हो।" फिर वह एक ओर बैठ गया। बिसना के शब्द अब भी उसके कानों में गूंज रहे थे। 'ऐसी आग लगाऊंगा कि जीवन भर याद करेगा।'

सुखराम ने सोचा—'क्या मालूम उसने जो कहा है, उसे करके दिखा दे। चारों ओर घास-फूस पड़ा है। हवा भी ज़ोर की चल रही है। आग लगाने में देर ही कितनी लगती है। हां, अगर आग लगाता हुआ पकड़ा जाय तो बच्चू को नानी याद आ जाए।'

यह विचार बार-बार उसके मन में चक्कर काटने लगे। वह भीतर से निकला और गली के मोड़ पर रुक गया। उसने अपने घर के चारों ओर देखा। उसे ऐसा लगा कि कोई दूसरे कोने से निकल कर कहीं छिप गया हो। वह चुपचाप खड़ा रहा और कान लगाकर आहट सुनने लगा। चारों ओर बिलकुल सन्नाटा छाया हुआ था। उसे किसी प्रकार की आहट सुनाई नहीं दी।

उसने सोचा—जान पड़ता है मुझे भ्रम हुआ है। फिर भी चलकर देख लेना चाहिये। देखने में हर्ज ही क्या ?

वह चुपके-चुपके उस ओर जाने जगा। जब वह उस कोने के पास पहुँचा तो उसने देखा कि कोई चीज़ भड़क कर फिर गायब हो गई। उसका कलेजा धड़कने लगा। वह रुक

गया। वह रुका ही था कि एक बार फिर कोई चीज भड़क उठी। उसी के प्रकाश में उसने देखा कि उसकी ओर पीठ किये कोई आदमी बैठा है। उसके हाथ में जलती हुई घास थी। वह घबरा गया। फिर जल्दी ही सम्भल कर लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ उसकी ओर चला। उस ने सोचा—रंगे हाथों पकड़ा गया। अब कहां जा सकता है।

सुखराम अभी उस आदमी के पास पहुँचा भी नहीं था कि दूसरी ओर घास में आग की लपटें उठने लगीं। घास का छप्पर था। उस तक आग को पहुँचने में जरा भी देर न लगी। अब उसे बिसना का चेहरा साफ-साफ दिखाई दिया। जिस प्रकार बाज कबूतर पर टूटता है, उसी प्रकार सुखराम बिसना पर टूट पड़ा। उसने सोचा—अब बच कर कहां जा सकता है ? पर पता नहीं बिसना ने कैसे उसकी आहट पा ली थी, वह गली की ओर तेजी से भागा। सुखराम पीछे-पीछे यह चिल्लाता हुआ भाग रहा था कि "भाग कर कहां जायेगा ?"

बिसना पकड़ा ही जाने वाला था कि उसने ऐसा चक्कर काटा कि पकड़ से बाहर हो गया। सुखराम ने भी उसी तरह चक्कर काटना चाहा पर फिसल कर गिर पड़ा। वह फिर उठा और चिल्लाने लगा— "मारो, पकड़ो, मारो, पकड़ो।" बिसना अपने दरवाज़े के पास पहुँच गया था। सुखराम ने वहां पहुँचकर उसे पकड़ने के लिये हाथ बढ़ाया। किन्तु इसी समय बिसना ने उसकी कनपटी के पास जोर से एक लाठी दे मारी। उसका सिर भिन्ना उठा। वह चक्कर खा कर गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

उसे जब होश आई तो बिसना का कहीं पता नहीं था।

चारों ओर दिन की तरह उजाला था। उसके घर की ओर से लपटों की धू-धू की आवाज़ आ रही थी। उसने घूम कर घर की ओर देखा। उसका सारा ओसारा जल रहा था। लपटें दूसरे छप्परों को पकड़ रही थीं। वह जोर से चिल्लाने लगा—"यह क्या हो गया ! दौड़ो, जल्दी करो, बुझाओ।" वह चिल्लाना चाहता था किन्तु उसके मुंह से आवाज़ नहीं निकलती थी। उसने भागना चाहा, पर उसके पैर लड़-खड़ाने लगे। वह धीरे-धीरे चलता हुआ अपने आंगन में पहुँचा। लोगों की भीड़ लगी

हुई थी। किन्तु ऐसी हालत में कोई कर ही क्या सकता था ! आग काबू से बाहर थी। पास-पड़ोस वाले अपना माल-सामान बचाने की चिन्ता में थे। वे जानवरों को ओसारे से बाहर निकाल रहे थे। हवा बड़े जोर की थी और घास-फूस के छप्पर थे। पलभर में आग सारे गांव में फैल सकती थी। और हुआ भी यही।

सुखराम के घर के बाद बिसना का घर भी आग की लपेट में आ गया। इसी तरह लगभग आधा गाँव जल कर राख हो गया। सुखराम के घर के लोग उस के बूढ़े पिता को बड़ी कठिनाई से बचा सके थे। घर का सारा सामान और कुछ पशु भी जल मरे थे। बिसना के पशु, बच्चे और दो-एक कपड़ों के सन्दूकों को छोड़कर और कुछ न बचा था। सारी रात आग धू-धू करके जलती रही। सुखराम अपने घर के सामने खड़ा-खड़ा यही रट लगाता रहा कि "यह क्या हो गया ? थोड़ी-सी घास खींच कर रगड़ देने से आग बुझ जाती।"

जब छत गिर पड़ी तो सुखराम जलती हुई आग में घुस गया और एक छोटे शहतीर को पकड़ कर खींचने लगा। लोगों ने उसे मना किया किन्तु उसने किसी की न मानी। वह शहतीर को खींच लाया। फिर वह दूसरे शहतीर को निकालने के लिए आगे बढ़ा। अब की ठोकर खा कर गिर पड़ा। उसका लड़का झट आगे बढ़ा और उसे खींचकर बाहर निकाल लाया। सुखराम के सिर के बाल और चेहरा भुलस गया था। उसका हाथ भी जल गया था। किन्तु उसे अपने जलने का जरा भी दु:ख-दर्द नहीं था। जैसे कुछ हुआ ही न हो। लोगों ने कहा—"उसका दिमाग ठीक नहीं रहा है।" सुखराम चिल्ला रहा था—"यह क्या हो गया ? थोड़ी-सी घास खींचकर रगड़ देने

से आग बुझ जाती !"

❀ ❀ ❀

सुबह ही मुखिया का लड़का सुखराम को बुलाने आया। उसने कहा—"जरा हमारे घर तक चल कर अपने पिता से आखरी भेंट कर लो। उनका दम टूटने ही वाला है। वह तुम्हें बुला रहे हैं।"

सुखराम अपने पिता को भी भूल गया था। उसकी समझ में मुखिया के लड़के की बात आ ही नहीं रही थी। उसने कहा—"किस का पिता ! किसको किसने बुलवाया है ?"

मुखिया के लड़के ने कहा—"तुम्हारे पिता ने तुम्हें बुलाया है। वे हमारे घर हैं। चलो, जल्दी चलो, उनका आखिरी समय है।"

यह कहकर वह सुखराम का हाथ खींचने लगा। सुखराम खोया-सा उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।

जिस समय बूढ़े को जलते मकान से निकाला गया था, तो वह भी कुछ झुलस गया था। लोग उसे उठा कर मुखिया के घर ले आये थे। मुखिया का घर गाँव के दूसरे कोने पर था और वहां तक आग के पहुँचने का डर नहीं था।

सुखराम जब मुखिया के घर पहुँचा तो मुखिया की बूढ़ी माँ बूढ़े के पास बैठी हुई थी। बुढ़िया ने कहा—"तुम्हारा लड़का आ गया।"

बूढ़े ने उसे अपने पास आने को कहा। सुखराम और भी पास जा बैठा।

बूढ़े ने कहा—"सुखराम ! मैंने तुमसे क्या कहा था। सारे गाँव को जलाकर राख किस ने किया ?"

सुखराम ने उत्तर दिया—"उसी ने पिताजी, मैंने उसे

अपनी आँखों आग लगाते देखा था। उसी समय थोड़ी-सी घास निकालकर रगड़ देता तो आग बुझ जाती।"

बूढ़ा—"बेटा यह बताओ। इस आग को लगवाने का ज़िम्मेदार कौन है ?"

सुखराम चुपचाप बैठा सुनता रहा। उसके मुँह से एक शब्द भी न निकल सका।

बूढ़ा फिर कहने लगा—"मैंने तुमसे क्या कहा था ? मेरी बात मान लेते तो यहां तक की नौबत न आती।"

अब सुखराम की आंखें खुलीं। कल शाम को कचहरी से लौटने पर बूढ़े ने जो कुछ कहा था यदि वैसा ही किया होता तो यह दुर्घटना ही न होती। यह बात बार-बार उसके दिमाग में चक्कर काटने लगी। उसने सिसकियां भरते हुए उत्तर दिया—"पिता जी ! अपराध मेरा ही है। अगर कल मैं उससे सुलह कर लेता तो यह सब कुछ न होता। मैंने आपका कहा न माना और उसका बुरा नतीजा सामने आ गया। अब मुझे क्षमा कर दें। मैं आपके और ईश्वर के सामने अपराधी हूँ।"

बूढ़े ने हाथ से कुछ संकेत किया। वह अपना हाथ उसके सिर पर रख कर उसे आशीर्वाद देना चाहता था ! किन्तु वह जरा रुक गया। उसने ईश्वर का बहुत-बहुत धन्यवाद किया। इसके पश्चात् उसने सुखराम से कहा—"जानते हो अब तुम्हें क्या करना चाहिये ?"

सुखराम रो रहा था। उसने सिसकियां लेते हुए उत्तर दिया—"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा कि मुझे क्या करना चाहिये !"

बूढ़ा आंखें बन्द करके कुछ सोचता रहा। कुछ देर के बाद उसने आंखें खोलीं और कहा—"देख सुखराम ! इस बात

की कभी किसी से चर्चा न करना कि आग किसने लगाई थी। यदि तुम उसके अपराध को क्षमा कर दोगे तो ईश्वर भी तुम्हारे अपराधों को क्षमा कर देगा।"

बूढ़े ने एक जोर की उबासी और अंगड़ाई ली और सदा के लिये आंखें बन्द कर लीं।

उसके बाद सुखराम ने कभी किसी से न कहा कि मैंने बिसना को आग लगाते देखा था।

अब सुखराम को बिसना से कोई शिकायत नहीं थी। उधर बिसना के आश्चर्य का कोई ठिकाना न था कि सुखराम ने मेरे आग लगाने की बात किसी से क्यों नहीं कही ? मुझ पर आग लगाने का दावा क्यों न किया ? पहले कुछ दिन तो वह डरा-डरा-सा रहता था किन्तु कुछ दिनों के बाद उसका डर जाता रहा। दोनों ने आपस में लड़ना-झगड़ना बन्द कर दिया। जब तक दोनों के घर बन कर तैयार नहीं हो गये, वे एक ही जगह रहते रहे। उन्होंने अपने नये घर फिर पास-पास बनाये और अच्छे पड़ोसियों की तरह रहने लगे।

* * *

मीठा ज़हर

धन्ना किसान भलमनसाहत के लिये सारे गाँव में मशहूर था। अपने काम से काम रखता। न किसी से लड़ता न झगड़ता। किसी के गाय-बैल उसकी खेती में पड़ जाते तो भी किसी को बुरा-भला न कहता।

एक दिन वह सुबह ही उठा। रात की एक बासी रोटी नाश्ते के लिये चद्दर के कोने में बांधी, हल कन्धे पर रखा और बैलों को हांकता हुआ खेत की ओर चल पड़ा। खेत पर पहुँच कर चद्दर उसने खेत के एक सिरे पर रख दी। हल को ठीक किया और जोतने लगा।

कोई पहर दिन चढ़े उसे भूख लगी। उसने बैलों को खड़ा कर दिया। वह अपनी चद्दर की ओर बढ़ा। उसने चद्दर उठाई। देखा तो रोटी गायब। उसने दोबारा चद्दर को उलट-पुलट कर देखा किन्तु रोटी का कहीं पता न चला। वह हैरान था कि आखिर हुआ क्या? रोटी गई कहाँ? न कोई आदमी इधर आया और न कुत्ता, फिर ले कौन गया? उसकी समझ में कुछ नहीं आया कि बात क्या है!

बात यह थी कि जब किसान अपने काम में लगा हुआ था, उसकी रोटी शैतान के बच्चे ने चुरा ली थी। वह झाड़ी में छिपकर बैठा हुआ था। और चाहता था कि किसान बुरा-भला बके और अपनी भलमनसाहत खो बैठे।

धन्ना भूखा था। उसे रोटी के खो जाने का बड़ा दुःख था। परन्तु उसने सोचा—अब क्या हो सकता है? दोपहर को

तो रोटी आ ही जाएगी। घंटे दो घंटे भूखा भी रह जाऊंगा तो मर थोड़े ही जाऊंगा। अगर किसी ने रोटी चुराई है तो वह अवश्य भूखा होगा। भगवान् उसका भला करे।

वह कुएं पर गया और पानी पीकर और कुछ सुस्ताकर फिर हल जोतने लगा।

शैतान के बच्चे ने देखा कि किसान ने किसी को बुरा-भला न कहा। उलटे यह कहा कि 'भगवान् उसका भला करे।' वह जो कुछ चाहता था, उससे उलटी बात हुई।

उसने यह सारा हाल अपने गुरु शैतान को सुनाया कि

उसने रोटी चुराई किन्तु किसान ने कुछ भी बुरा-भला न कह कर यह कहा कि 'भगवान् उसका भला करे'।

यह सारा किस्सा सुना तो शैतान बहुत बिगड़ा। उसने शैतान के बच्चे को खूब फटकारा। वह कहने लगा, "अगर तुम एक अपढ़ किसान को भी अपने जाल में नहीं फंसा सकते तो और क्या कर सकते हो। जल्दी जाओ और कोई ऐसा नया तरीका निकालो कि वह ईश्वर के नाम को सदा-सदा के लिये भूल जाए। उसकी सारी भलमनसाहत जाती रहे और वह पूरा जानवर बन जाए। अगर तीन साल के अन्दर तुमने ऐसा न किया तो अपनी खैर न समझना।"

शैतान का बच्चा सोचने लगा कि अब कौन-सा उपाय करूं कि वह किसान काबू में आए। बहुत कुछ सोच-विचार करने के बाद उसकी समझ में एक उपाय आया। उसने निश्चय किया कि अब इसी उपाय को काम में लाऊंगा।

शैतान के बच्चे ने मजदूर का भेस बनाया और धन्ना किसान के यहां नौकरी कर ली। वह खूब मन लगाकर काम करता। धन्ना उस पर बहुत खुश था।

पहले साल उसने धन्ना को नीची ज़मीन में खेती करने की सलाह दी। किसान ने उसकी बात मान ली। उस साल वर्षा नहीं हुई। कड़ी धूप से लोगों की फसल सूख गई। किन्तु धन्ना के खेतों में नमी रहने के कारण खूब फसल हुई।

दूसरे साल शैतान के बच्चे ने धन्ना को कहा कि अबकी बार ऊंचाई पर की ज़मीन में बीज बोया जाए। किसान ने वैसा ही किया। करता भी क्यों न। पिछले साल नौकर की बात मानने से ही तो लाभ हुआ था। उस साल बड़े जोर की वर्षा हुई। अधिक बरसने के कारण लोगों की फसलें बह गईं। किन्तु ऊंचाई पर होने के कारण धन्ना की फसल खूब हुई।

पहले साल से भी दुगनी उपज हुई। धन्ना सोचने लगा कि वह इतने अनाज को रखे कहां ? इसका करे क्या ?

शैतान के बच्चे ने कहा—"गुड़ और जौ की तो शराब बना लो और अनाज खाने के लिये रख लो।"

धन्ना ने कहा—"मैं तो शराब बनाना जानता नहीं।"

शैतान के बच्चे ने कहा—"चिन्ता मत करो। मैं सब सिखा दूंगा !"

अब तो धन्ना खूब शराब बनाने लगा। वह खुद भी पीता और मित्रों को भी पिलाता। उसका यह रंग-ढंग देखा तो शैतान का बच्चा बहुत खुश हुआ। वह अपने गुरु के पास गया और अपना सारा कारनामा कह सुनाया।

उसके गुरु शैतान ने कहा—"चलो, मैं यह सब कुछ अपनी आँखों से देखना चाहता हूँ।"

शैतान का बच्चा और उसका गुरु दोनों धन्ना के घर पहुँचे। उस दिन धन्ना ने अपने कई अमीर पड़ोसियों को खाने-पीने के लिए बुलाया हुआ था। वह सारे मेहमानों को शराब पिला रहा था। उसकी स्त्री भी स्त्री मेहमानों की आव-भगत में लगी हुई थी। अचानक उसका पैर फिसल गया और हाथ से शराब का प्याला गिर गया। प्याले के टुकड़े-टुकड़े हो गये।

धन्ना ने देखा तो गुस्से से उसकी आँखें लाल हो गईं। वह इतने मेहमानों के सामने ही अपनी स्त्री को कहने लगा—"देखकर नहीं चलती हो, आँखें फूट गई हैं क्या ? प्याला ठीक से पकड़ा होता तो कैसे छूट जाता। यह कोई कुएं का पानी नहीं है कि जहाँ चाहा गिराते फिरे। नासमझ, ऐसी कीमती चीज को यों ही गिराकर नष्ट कर दिया।"

शैतान के बच्चे ने अपने गुरु को कहा—"जरा देखते जाओ। यह वही आदमी है, जिसने रोटी के खो जाने पर जरा भी

गुस्सा नहीं किया था, जब कि उन दिनों इसके पास कुछ भी नहीं था।

धन्ना अपनी स्त्री को बुरा-भला कहता रहा और मेहमानों को शराब भी पिलाता रहा। इसी समय एक भिखमंगा थका-टूटा कहीं से आ पहुँचा। लोगों को खाता-पीता देखकर उसके मुँह में पानी भर आया। धन्ना ने उसे बुरी तरह दुत्कारा

और वहां से धक्के मारकर भगा दिया।

शैतान यह सब देख देखकर प्रसन्न हो रहा था। शैतान के बच्चे ने कहा—"अभी तो और बहुत कुछ होने वाला है।"

मेहमानों ने मनमानी शराब पी। धन्ना ने भी कई प्याले

पी डाले। अब सब लोग इधर-उधर की गप्पें उड़ाने लगे।

शैतान के बच्चे ने कहा—"अभी तो यह लोग लोमड़ी की तरह खुशामदी बने हुए हैं। और अभी देखना, पूरे खूंखार भेड़िये बन जायेंगे।"

धन्ना ने सब को एक-एक प्याला और दिया। बस फिर क्या था। सभा का रंग ही बदल गया। सब बहकने लगे। खूब शोर-गुल होने लगा। एक दूसरे को गालियां बकने लगे। हाथा पाई पर नौबत आ गई। घूंसे और लातें चलने लगीं।

शैतान यह देखकर खूब प्रसन्न हुआ। शैतान के बच्चे ने कहा—"अभी थोड़ी देर और ठहर जाइये। देखना इनकी कैसी दुर्गत बनती है।"

इसके बाद सब अपने-अपने घर को जाने लगे। धन्ना उन्हें छोड़ने चला। उसके पैर सीढ़ियों पर लड़खड़ा गए और वह लुढ़कता हुआ नीचे जा पड़ा। उसके आगे जितने लोग सीढ़ियों पर से उतर रहे थे, सब धक्का लगने से गिरते गए। किसी का सिर फूटा। किसी का दांत टूटा। किसी के पैर में मोच आ गई। सब एक दूसरे को कोसने लगे। जो नहीं गिरे थे उनमें से कई कै करने लगे। उनके सारे कपड़े गंदे हो गए।

शैतान ने यह तमाशा देखा तो बहुत प्रसन्न हुआ। उसने शैतान के बच्चे की खूब पीठ ठोंकी।

शैतान के बच्चे ने कहा—"इस मीठी जहर से अगर कोई एक बार भी मुँह लगा लेता है तो फिर क्या मजाल कि इसे छोड़ सके। आदमी को जानवर बनाना हो तो इससे बढ़कर और कोई दवाई नहीं है। बड़े-बड़े घरों को इसने उजाड़ कर रख दिया है। मैं जिस घर को उजाड़ना चाहता हूँ, वहाँ इस मीठे जहर को पहुँचा देता हूँ।

* * *